IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

घोरखोदिया : एक रहस्यमय उपन्यास

अनिल हसमुखभाई राजहंस,

पी.एचडी. शोधकर्ता (गुजराती),

हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात यूनि. पाटन

लेखक परिचय

मोना पात्रावाला गुजराती साहित्य में कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। वह **दक्षिण गुजरात** की निवासी हैं। उन्होंने वर्ष-2002 में **रानी बिलाड़ो** नामक कहानी संग्रह दिया है। उन्होंने दक्षिण गुजरात के नवसारी जिले के आदिवासी तालुका के रूप में प्रसिद्ध वाँसदा और उसके आसपास के आहवा-डांग जैसे **रानीपरज जाति के आदिवासियों** के जीवन, उनके शोषण और गरीबी की बात अपने उपन्यासों में की है।

उन्होंने **घोरखोदिया भाग-1 और 2 (2009)**, 'वेश भाग-1, 'अंधारपड़ळ भाग-2, 'अगनपड़ळ भाग-3, 'अंधार पछेडो - भाग-4 आदि उपन्यास दिए हैं। इनमें तंत्र-मंत्र, षड्यंत्रों (कावा-दावा), और पुरुषों के साथ स्त्रियों की निर्बाधता की बात की गई है। पारसी लोगों की, आदिवासी लोगों की क्षेत्रीय बोली में साहित्य का सृजन किया है। उनके सभी साहित्य में दक्षिण गुजरात के आदिवासी समाज की बात है।

मोना पात्रावाला का उपन्यास **घोरखोदिया** दो भागों में विभाजित है। उपन्यास में दक्षिण गुजरात के **पारसी-मुसलमान समुदाय** के ज़मीन मालिक और खेती का काम करने वाले, साथ ही लकड़ी के व्यापारी - सेठ लोगों के समाज और उनके जीवन व्यवहार, उनके रीति-रिवाजों और उनके स्वभावगत विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

उपन्यास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण और रहस्यमय पात्र **काबो भंडारी** है। काबा भंडारी के चरित्र के साथ-साथ उपन्यास आगे बढ़ता है। गाँव के लोग मानते हैं कि कई साल पहले **वेस्टा** नाम का लड़का गाँव छोड़कर समुद्री जहाज़ में बैठकर चला गया था, वही काबो भंडारी बनकर वापस आया है।

काबो भंडारी **सख्त स्वभाव** का है लेकिन **दिल का साफ** आदमी है। गाँव के लोग, कला, देवी और लाखी दायी आदि अभी भी इस बात को लेकर स्पष्ट नहीं हैं कि वह वेस्टा ही है या कोई दूसरा व्यक्ति?

मानवीय संबंध और संघर्ष

मानव जीवन संबंधों से ही पहचाना जाता है और अधिक विकसित होता है। यह उपन्यास भी मानवीय संबंधों में निहित **विविधताओं** को दर्शाता है। ग्रामीण जीवन के संबंधों की विविधता में उपन्यास के सभी पात्र कभी सुखी होते हैं तो कभी दुःखी, इसका मूल कारण **जमीन, बाग (वाड़ी) और संपत्ति का मोह**, साथ ही **धनवान बनने की धुन** और **अनैतिक संबंध** हैं। जब संबंधों में ईमानदारी नहीं रहती, तो व्यक्ति का जीवन दुःखमय हो जाता है, इस बात की अनुभूति उपन्यास में विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत हुई है।

- **फकीरजी सेठ का परिवार: आलामाय** और **बानूमाय** फकीरजी सेठ की पत्नियाँ हैं। **कावस** बानूमाय का, और **नरीमान** आलामाय का बेटा है। दोनों सौतेले चचेरे भाई हैं और अपने पिता फकीरजी सेठ के कारण दोनों को अलग रहना पड़ता है। दो बेटे होने के बावजूद और पैसे वाले होने पर भी फकीरजी सेठ के जीवन में सुख-शांति नहीं है। उनकी पहली पत्नी आलामाय बेटे नरीमान के साथ कावेरी नदी के किनारे स्थित बाग (वाड़ी) में वर्षों से अलग रहती है और फकीरजी सेठ वहाँ जा नहीं पाते। बानूमाय के साथ फकीरजी सेठ

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

गाँव में रहते हैं। उनके साथ कावस रहता है, लेकिन वह उनसे ठीक से बात नहीं करता, उनका कहा नहीं मानता, और सामने के किनारे रहने वाले सौतेले भाई को कोई संपत्ति देने से मना करता है। फकीरजी की मृत्यु के बाद कावस पर बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। कावस स्वयं जंगल और अपने बाग में **काला वेश पहनकर काले घोड़े पर** सवार होकर रात-आधी रात भटकता है। कावस शादी नहीं करता, इस बात पर उसकी माँ बानूमाय के साथ झगड़ा होता रहता है। जमीन, बाग और व्यापार के मामले में कावस को फकीरजी सेठ के प्रतिद्वंद्वियों से सावधान रहना पड़ता है।

- **भीखुमिया का परिवार: भीखुमिया** की शादी **सल्लूमा** से हुई है। वह पैसे वाले हैं, उदार दिल के हैं इसलिए सभी को पैसा देकर मदद करते हैं। रंगीन मिज़ाज के होने के कारण उनके घर में भी झगड़ा होता रहता है। भीखुमिया के अब्दुल्लो, रहीम सुखो और वेस्टो नाम के तीन बेटे हैं। अब्दुल्लो उनका सगा बेटा है। भीखुमिया ने **बाली** के साथ गुप्त संबंधों से **सूकर** को जन्म दिया है। बाली उनकी **रखैल** है। बाली को छोड़ देने के कारण सूकर को बचपन से ही पिता का स्नेह नहीं मिला। वहीं, बाली के लिए सूकर **अभागा बेटा** है, इसलिए वह बात-बात पर उसे टोकती रहती है। भीखुमिया ने भी बाली पर अब तक अत्याचार ही किया है, और इसीलिए बाली यह तय नहीं कर पाती कि उसका बेटा सूकर भीखुमिया, नानजी भगत या बड़े कसबा के घाँची सेठ में से किसका है। भीखुमिया के **खालपी डोशी** के साथ भी गुप्त संबंध हैं, यह जानते हुए भी बाली भीखुमिया से कुछ नहीं कह पाती। सूकर से पूछे बिना ही बाली सूकर की सगाई खालपी डोशी की बेटी **कमरी** से कर देती है, और इसीलिए सूकर और बाली के बीच झगड़ा होता है। सूकर बाली से कुछ कह नहीं पाता।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

- **सल्लूमा की चिंताएँ:** सल्लूमा भीखुमिया की पत्नी है। **अब्दुल्लो** उनका सगा बेटा है। सल्लूमा पहले से ही भीखुमिया के काले कारनामों (गोरखधंधा) को जानती है। रहीम सुखो को भी सल्लूमा ने अपने बेटे की तरह पाला है। सल्लूमा जानती है कि काबो भंडारी ही वेस्टो है और उसका सौतेला बेटा है। वह इस बात की चिंता करती है कि उसका सगा बेटा कौन है? क्योंकि बचपन में उसका बेटा वेस्टा समुद्री जहाज़ में बैठकर भाग गया था, इसलिए सल्लूमा को पुत्र-प्रेम का सुख नहीं मिला। उनका सगा बेटा अब्दुल्लो ही कावेरी नदी के उस पार दो-चार दिन रुक जाता है और वह अब्दुल्ला को कुछ कह नहीं पाती, इसलिए दुःखी है। इसके अलावा, अब्दुल्लो अक्सर काबा के बाग में जाता है। उसके पति भीखुमिया के मणि, गजरी, बाली के साथ गुप्त संबंध हैं और उन्होंने आलामाय को अपनी धर्म की बहन बनाया है, लेकिन लोग उस बारे में अलग सोचते हैं, इसलिए सल्लूमा भीखुमिया से दुःखी है।

अनैतिक संबंध और सामाजिक विसंगति

उपन्यास के सभी पात्र जैसे **नरीमान, धनी और लीला** के साथ, तो **काबो भंडारी देवी** के साथ **अवैध संबंध** रखता है। वह अक्सर रात-आधी रात उनके घर जाता है, साथ बैठकर शराब पीता है, और एक-दूसरे से रूठ जाते हैं। संबंधों में निहित यह विसंगति उन्हें सुख नहीं देती। वे लगातार **परेशान** रहते हैं।

घोरखोदिया का अर्थ और पात्रों के कार्य

घोरखोदिया का एक अर्थ **कब्र खोदने वाला** आदमी। दूसरा अर्थ जमीन में रहने वाला एक प्राणी जो ज़मीन में मृत व्यक्ति की कब्र खोदकर खा जाता है, और तीसरा लाक्षणिक अर्थ है **कब्र**

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

खोदना यानी कब्र खोदने जैसा **बुरा काम** करने वाला व्यक्ति। इस प्रकार, उपन्यास में तीनों अर्थों के अनुसार सभी पात्रों में से कुछ ऐसे पात्र हैं जो इस तरह के काम करते हैं:

- वे **एक-दूसरे से ईर्ष्या** करते हैं।
- अपने ही पुत्रों को, पत्नी को, अपने बाग-खेतों में, लकड़ी के कारखाने-दुकान में काम करने वाले मज़दूरों को **परेशान** करते हैं।
- गरीबों की मदद करने के बजाय **उन पर अत्याचार** करते हैं।

काबो भंडारी अपने बाग में आई **आरामगाह (कब्र)** को खोदने के लिए उत्सुक है। इसमें उसका दोस्त सूकर भी उसका साथ देता है। **गफुर पिंजारा** अपने मालिक को असमंजस में रखता है, और अंततः वे लोग दुःखी होते हैं।

कावस बचपन से ही जंगली कौवे और चमगादड़ को देखकर गुलेल या बंदूक से **शिकार** करता है, उसे यह काम करने में मज़ा आता है।

अमरत सेठ, फकीरजी सेठ और भीखुमिया आदि अपने लकड़ी के व्यापार के लिए एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन बन जाते हैं। वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करके और बड़े व्यापारी बनने के लिए **षड्यंत्र** रचते हैं। यह परंपरा आगे चलकर उनके बेटों **सूकर, अब्दुल्लो और नरीमान** में भी उतर आती है। कावस जिसके पीछे पड़ जाता है, उसे बहुत परेशान करता है, अपने मज़दूरों को भी नहीं छोड़ता। रात-आधी रात जंगल में **काला वेश धारण करके** भटकता है। वह शादी करने से मना करता है, और दूसरी ओर गाँव में स्त्रियाँ-औरतें रखकर घूमता है।

रहस्यमय घटनाएं : तरापावाळे भूत और घोरखोदिया

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

कावेरी किनारे के क्षेत्र में जंगल से सटे बाग में रात-आधी रात **तरापावाळे भूत** (नाव चलाने वाला भूत) हो गया है, और वह रात में लालटेन लेकर **नाव (तरापा) चलाता है** और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता है, जिससे सभी बाग वाले और पूरा गाँव भयभीत हो जाते हैं। यह भूत अक्सर सभी के बागों में नुकसान पहुंचाता है। अमरत सेठ, काबो भंडारी, कावस, नरीमान, काबा, शांता आदि सभी के बागों में अक्सर नुकसान होता रहता है। क्या वास्तव में तरापावाळे भूत ही यह काम करता है या कोई और? यह तय नहीं हो पाता।

गाँव में रहने वाले लोग तरापावाळा भूत से और रात-आधी रात आने वाली आवाज़ों से, मोटे बाँस के फटने से **डर** जाते हैं। जंगली सूअर की आवाज़ से रात-आधी रात **भारी रक्त उबाल** (तनाव) रहता है। पूरी रात कावेरी नदी का किनारा **बंदूकों की आवाज़** से गूँजता रहता है। तरापावाळे भूत के डर से कावेरी नदी में मछली पकड़ने गए लोग भी चमगादड़ों के झुंड को गहरे जंगल से निकलते देख तुरंत घर वापस आने के लिए निकल पड़ते हैं। गाँव और आसपास के बागों में तरापावाळे भूत की बात फैल जाती है, तो दूसरी ओर जंगल क्षेत्र की ओर जिनकी वाड़ी-खेत हैं, वहाँ **आरामगाह (कब्र) की ओर खुदाई** होती रहती है। फावड़े-कुदाल से खोदने की आवाज़ सुनकर, वास्तव में क्या हो रहा है यह देखने के लिए कावस, अमरत सेठ, अब्दुल्लो और काबो भंडारी आरामगाह की ओर चक्कर लगाते हैं। कोई फकीरजी सेठ की आरामगाह खोद रहा है, यह जानकर अब्दुल्लो और सल्लूमा दुःखी होते हैं।

जंगल के क्षेत्र की ओर आई हुई गहरी घाटी रात-दिन सूनी रहती थी। उसमें जंगली खरगोश, तीतर, नेवला निकलते थे, कभी-कभी **घोरखोदिया** अपने नाखूनों से जंगली जीव-जंतुओं का शिकार करते थे। उनकी आवाज़ सुनकर ही वातावरण भयभीत हो जाता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

कावेरी के उस पार जंगल विभाग ने एक विशाल जंगल बनाकर संरक्षित किया है। वहाँ रात-आधी रात कावस और अब्दुल्लो जंगल कटवाकर लकड़ी भरकर लकड़ी के कारखाने में **गायब** कर देते हैं। देशी सिपाही और जंगल विभाग वाले शराब और मुर्गा-मुर्गियाँ खा जाते थे। यह सब वर्षों से चला आ रहा है। जंगल विभाग के सिपाही भी तरापावाळे भूत से डरते हैं।

कावस और काबो भंडारी तरापावाळे भूत से डरते नहीं हैं। वे मानते हैं कि वह भूत है ही नहीं, और रात-आधी रात **काला वेश पहनकर काला घोड़ा** लेकर भटकते हैं। अपनी वाड़ी में दोस्तों के साथ **मुर्गा-मुर्गी की दावत** करते हैं। तरापावाळे भूत का इतना डर है कि कई मज़दूर बाग में ही पड़े रहते हैं। आसपास के बागों में भी झाँकते नहीं हैं। काबा का **तरापा भी भूत तोड़-फोड़ डालता है।**

षड्यंत्र, जादू-टोना और मृत्यु

एक रात, कावस, अब्दुल्लो, अमरत सेठ, धनो और नारन जैसे मज़दूरों को भी तरापावाळे भूत के लंबे अलाप सुनने को मिलते हैं, जिससे वे सभी डर जाते हैं कि वास्तव में कावेरी नदी के किनारे आधी रात को कोई भूत आता है। बाली जब सूकर की शादी खालपी की बेटी कमरी से करवाती है, तब सूकर कमरी के बजाय वजली को प्यार करता है। अमावस्या की रात को कमरी ही वजली बनकर काला वेश पहनकर सूकर से मिलने आती है, उस समय वजली को भी काला वेश धारण किया हुआ तरापावाळे भूत दिखाई देता है और कमरी भी यह देखकर भयभीत हो जाती है; यह भूत अधिकतर कावस के बाग में आरामगाह (कब्र) की ओर अधिक देखा जाता है। खालपी डोशी, कमरी, लाखी दायी जैसे पात्र तंत्र-मंत्र करते हैं, और अधिक धनवान बनने के लिए फकीरजी सेठ घोड़े के पैरों के नीचे जीवित नाल (जूती) बिठाते हैं। कावस ने जो वाड़ी खरीदी है, उसे गाँव वाले भूतवाड़ी कहते हैं; खालपी डोशी तरह-तरह के रूप बदलती है और वह रात-आधी रात अकेली

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

ही साधना करने के लिए काला वेश पहनकर जंगल में जाती है। सूकर, अब्दुल्लो, सल्लूमा और काबा भंडारी को अक्सर रात-आधी रात बुरे सपने आते हैं और वे नींद से चौंक जाते हैं; गफुर अधिक धनवान होने के लिए घोड़े की नाल को मंत्रित करके नदी में विसर्जित करता है, और काबा को काले घोड़े के बुरे सपने आते हैं, इसलिए वह छीबी और कासम बगी से ताबीज और मादलियाँ बनवाता है। खालपी डोशी जब तंत्र-मंत्र करने जाती है, तो कोई व्यक्ति उसकी आँखें फोड़ देता है, जिससे उसे बहुत वेदना होती है। कासम बगी भी खुद खोदी हुई कब्र से मिली नांद (बड़ा बर्तन) से थोड़ा सोना, रुपये आदि मिलने का इंतजार करता है और जब वह फिर से नांद लेने जाता है, तो नरीमान ही उसे तरापावाळा भूत समझकर उसकी हत्या कर देता है। अमरत सेठ छाती में घोड़े की लात लगने से मर जाता है, और कावस कावेरी किनारे पर तरापावाळे भूत के कारण वहाँ जाने से मर जाता है। कावस का घोड़ा बानूमाय का हाथ काट लेता है और उन्हें रेबीज़ का रोग हो जाता है। नरीमान के घोड़े को कोई बंदूक की गोली से मार डालता है, और नरीमान बानूमाय को पानी के जोर से मार डालता है, यह जानकर आलामाय नरीमान के साथ हमेशा के लिए बोलना और रहना बंद कर देती है। दूसरी ओर, काबो भंडारी, गफुर, तरापावाळे भूत, काले घोड़े वाला भूत और बाकी रहे अपने बाग के भूतघोड़ों से त्रस्त हो जाते हैं; लाखी दायी, जिसे काबो अपनी माँ मानता है, काबा के वहाँ से अपनी वाड़ी में रहने चली जाती है और बहुत समझाने पर भी लाखी काबा भंडारी के यहाँ रहने नहीं आती, जिससे काबो भंडारी बहुत दुःखी होता है और अंततः अपनी वाड़ी में अकेला रहता है तथा लाखी काबा से मिलना भी बंद कर देती है।

उपन्यास में कावेरी नदी के किनारे की, बाग के मालिक के **शिकार** करने की, **भयानक जंगल** की, उसमें रहने वाले **चमगादड़ और घोरखोदिया** की, तरापावाळे भूत की, काले घोड़े वाले भूत की, **मंत्र-तंत्र** की, **माया** की, **खजाने** की, पुरुषों की **तानाशाही और निरंकुशता** की, **कब्र खोदने** की, स्त्री-पुरुषों के **रंगीन मिज़ाज** की, सामाजिक जिम्मेदारी की, खेती-मज़दूरी की, **संपत्ति के बँटवारे** को लेकर होने

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue 01 2022

वाले झगड़े-झंझट की, स्त्रियों और पुरुषों के साथ बैठकर **शराब पीने** की, **वहम-शंका** की, **भूत-प्रेत** की, बुरे सपनों के **डर** की, कला जैसी स्त्रियों के बड़ी उम्र में शादी के लिए तैयार होने की, स्त्रियों पर **शारीरिक अत्याचार** की, आरामगाह खोद डालने की, **ईर्ष्या, दुश्मनी, मित्रता** की, **अरबी घोड़ों के व्यापार** की, **शराब की बुराई** की, और मुर्गा-मुर्गी खाकर शराब पीने की बात प्रस्तुत हुई है।

इस प्रकार, **घोरखोदिया** उपन्यास **पारिवारिक कथा** के साथ-साथ सामाजिक संबंधों से जुड़ी **सामुदायिक एकता** और **ग्रामीण जीवन की ठोस वास्तविकता** को प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. ધોરખોદિયા, भाग-1 और 2, मोना पात्रावाळा, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण - 2009.